

चिन्तन

THINKING

B.A-I-(H)
PAPER-I

चिंतन एक अप्रकृत उच्चस्तरीय जाटिउड मानसिक क्रिया है, अतः इतना संकलित परिभाषा देना कठिन है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसकी परिभाषा अलग-अलग ढंग से की है। -

1. इंगलिश (English) :- "चिंतन एक अप्रत्याक्षालक प्रक्रिया था एक ऐसी क्रिया है, जो मुख्यतः प्रत्यक्षालक नहीं है और जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु या किसी वस्तु के कुछ पहलुओं या परिस्थितियों से अकमत होता है।"
2. वारेन (Warren) :- "चिंतन व्यक्ति के समस्त उपलब्ध समझ से उत्पन्न होनेवाली प्रतीक्षालक स्वरूप की एक विचारालक क्रिया है, जिसमें समझ के प्रभाव में निर्देशन में कुछ प्रयत्न और गुन होता है और अंततः समझ का समाधान हो जाता है।"
3. डैशियल (Dashiell) :- "उच्चस्तरीय स्तर पर समझ, समाधान की आंतरिक कहानी ही चिंतन है।"
4. जोसविक (Josswick) :- "चिंतन द्वारा वास्तविक वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा उनके प्रतिनिधियों के अंतर्गत के बीच व्यपत्ति स्थापन की जाती है।"

5. कागन एवं हेमन (Kagan & Haveman):-
 चिंतन को परिभाषा, प्रतीका, प्रत्यय,
 विषय या अन्यान्य किसी मध्यस्थ इकाइयों
 के मानसिक उलट-पुलट या हर-फेर की
 प्रक्रिया को रूप में सबसे अच्छे ढंग से
 वर्णित किया जा सकता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं को देख
 गे, चिंतन को एक प्रतिनिधिकारी या
 प्रतीकात्मक मानसिक प्रक्रिया कहा गया है,
 जिसका संबंध वर्तमान में उपस्थित सामान्य
 का मानसिक रूप से अनुभव करने, उसके
 समाधान की आवश्यकता की पहचान और
 तथा उस दिशा में, मस्तिष्क में विद्यमान पूर्व
 अनुभवों के प्रतीकों की मध्यस्थता द्वारा सामान्य
 का समाधान ढूँढने से रहता है।

अतः निष्कर्ष के तौर पर हम
 चिंतन की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं:-
 "चिंतन एक उच्चस्तरीय अत्यंत प्रतीकात्मक
 मानसिक प्रक्रिया है जिसका संबंध किसी
 सामान्य का प्रत्यक्षीकरण करने तथा उसका
 उपयुक्त हल ढूँढने से रहता है।"

चिंतन के प्रकार

- चिंतन को दो वर्गों में बांटा जा सकता है:-
- (i) आत्मविमोही चिंतन (Autistic thinking)
 - (ii) वास्तविक या यथार्थ चिंतन (Realistic thinking)

17.9

1. आत्मविमोही चिंतन (Autistic thinking):-
आत्मविमोही चिंतन को काल्पनिक चिंतन भी कहा जा सकता है। इस चिंतन में व्यक्ति केवल काल्पनिक दुनिया में ही विमग्न करता है। स्वप्न कल्पना, इच्छापूर्ण चिंतन, दिवाह्वान आदि आत्मविमोही चिंतन के विभिन्न रूप हैं।
उदाहरण के लिए, स्वप्न एक सामान्य घटना है जिसमें व्यक्ति ऐसी-वस्तुओं का देखा है जिनका संबंध स्वप्नदृष्टा के व्यक्तिगत पक्षों के साथ रहता है।

2. वास्तविक या ध्वार्थ चिंतन (Realistic thinking):-
वास्तविक चिंतन आत्मविमोही चिंतन के ठीक उल्टा है। इसका संबंध मानव के वास्तविक जीवन की समस्याओं से रहता है। अर्थात् व्यक्ति अपने काल्पनिक अथवा जीविकोपार्जन जैसे वास्तविक पक्षों से संबंध समस्याओं के समाधान की आवश्यकता से प्रेरित होता है जब सोचने की क्रिया करता है, तब उसे ही वास्तविक चिंतन अथवा तर्कना अथवा सन्नोपार्जन क्रिया कहते हैं। जैसे:-
शरण या शिल्पकारी-रूपक शैली में चिंतन का एक उपयोग समाधान देकर है।

Next day

Hrishikesh Lal,
Deptt - Psychology

B.M.C. Rahikar